IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छायोवादोत्तर काव्य और उपेन्द्र नाथ अश्क़

डॉ. तृप्ति उकास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शास. महाकोशल कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.

सारांश

हिन्दी एवं उर्दू भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार, निबन्धकार, लेखक, कहानीकार उपेन्द्र नाथ अश्क़ ने साहित्य की प्रायः समस्त विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। साहित्य की किसी एक विधा से वे बंध कर नहीं रहे, उसी तरह किसी विधा में एक ही रंग की रचनाएँ भी उन्होंने नहीं की हैं। अपने व्यक्तिगत जीवन में अगणित संघर्षों का सामना करते हुए वे साहित्य की नित नवीन ऊँचाईयाँ प्राप्त करते हैं। जहाँ एक ओर अश्क़ उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से मध्यमवर्गीय जीव का चित्रण करते हैं वहीं दूसरी ओर अपने काव्य के माध्यम से वे श्रमिक वर्ग के दयनीय जीवन को पाठकों के समक्ष रखने सक्षम रहे हैं। अश्क़ के काव्य में मूलतः छायोवादोत्तर काव्य प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इन प्रवृत्तियों के प्रति उनका समर्पण किसी प्रतिबद्धता के चलते न हो कर सहज भाव से ही है। अश्क़ ने अपनी सृजन यात्रा में ऐसी किसी भी धारा या प्रवृत्ति का सदा विरोध किया है, जो काव्य के उद्देश्य के सम्प्रेषण में बाधा पहुँचाती हो तथा जो सहजता के धरातल पर प्रामाणिक न लगती हो। इस कारण ही उनकी रचनाएँ छायावादी युग में भी रहस्यवाद से मुक्त हैं, प्रगतिवादी युग में प्रचार–प्रसार से मुक्त हैं और नयी कविता की अगुआई करते हुए भी बौद्धिक जटिलता, कृत्रिम कुण्ठा, बनावटी निराशा, अति अहमवादिता से सर्वथा मुक्त हैं।

मूल शब्द

रचना प्रक्रिया, वैयक्तिक पीड़ा का प्रभाव, सामाजिक स्थितियों का वर्णन, मनोवैज्ञानिकता, उत्तर छायावादी प्रवृत्तियाँ।

विस्तार

हिन्दी एवं उर्दू भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार, निबन्धकार, लेखक, कहानीकार उपेन्द्र नाथ अश्क़ ने साहित्य की प्रायः समस्त विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। साहित्य की किसी एक विधा से वे बंध कर नहीं रहे, उसी तरह किसी विधा में एक ही रंग की रचनाएँ भी उन्होंने नहीं की हैं। अपने व्यक्तिगत जीवन में अगणित संघर्षों का सामना करते हुए वे साहित्य की नित नवीन ऊँचाईयाँ प्राप्त करते हैं। जहाँ एक ओर अश्क़ उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से मध्यमवर्गीय जीव का चित्रण करते हैं वहीं दूसरी ओर अपने काव्य के माध्यम से वे श्रमिक वर्ग के दयनीय जीवन को पाठकों के समक्ष रखने सक्षम रहे हैं। उन के काव्य लोक का अध्ययन प्रमाणित करता है, कि सृजन संवेदना जहाँ एक ओर अन्दर से बाहर की ओर उन्मुख हुई है, वहीं दूसरी ओर बाहर की जटिलता से भीतर की ओर भी उन्मुख है।

अश्क़ की रचना प्रक्रिया में कालान्तर में कई मोड़ दृष्टिगत होते हैं। उन की प्रारम्भिक कविताएँ सहज अनुभूति से अनुप्राणित हैं तो वहीं बाद की कविताओं में समाज की विसंगतियाँ अनुभूत होती हैं। उन की काव्य चेतना में युग की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से झलकती हैं। उदार तथा दृढ़ व्यक्तित्त्व के धनी अश्क़ के काव्य के दो मूल स्वर हैं– एक वैयक्तिक और दूसरा सामाजिक। अश्क़ की प्रकाशित काव्य कृतियाँ इस प्रकार हैं – प्रातः दीप, उर्म्मियाँ, दीप जलेगा, बरगद की बेटी, चाँदनी रात और अजगर, सड़कों पे ढले साये, खोया हुआ प्रभा मण्डल, अदृश्य नदी, पीली चोंच वाली चिड़िया के नाम, स्वर्ग एक तलघर है, एक दिन आकाश

ने कहा। प्रारम्भिक रचनाएँ निराशा तथा वेदना से पूर्ण हैं, स्मृति के पीड़ादायक क्षणों से सम्बन्धित हैं। परवर्ती कविताएँ सामाजिक स्थितियों, फरेबों के प्रति एक भयानक आक्रोश और दुःख बोध व्यक्त होता है।

काव्य यात्रा के विकास के साथ ही उन का दृष्टिकोण में भी उत्तरोत्तर परिवर्तित होता गया। समाज से जुड़ी समस्याओं का वर्णन करते हुए वर्ग–वैषम्य एवं जाति प्रथा जैसी कुरीतियों का वर्णन वे अपने काव्य में करते हैं। साथ ही साथ उन के काव्य में आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का भी वर्णन भी मिलता है। वे अपने काव्य के द्वारा निरन्तर संघर्ष की प्रेरणा देते हैं। सामाजिक रूढ़िगत परम्पराओं ने मानव का सदैव शोषण किया है। वे शोषित तथा पीड़ित वर्ग को क्रान्ति करने के लिये प्रेरित करते हैं तथा ग़रीब मज़दूरों एवं दीन–दुखियों का शोषण करने वाले साम्राज्यवादियों और पूँजीवादियों का अन्त करना चाहते हैं। उन का मानना है, कि पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने के पश्चात् ही आदर्श समाज का निर्माण हो सकता है तथा आम मनुष्य को अपने श्रम का सही फल प्राप्त हो सकेगा।

अश्क़ के काव्य में मनोवैज्ञानिकता भी दृष्टिगोचर होती है। एक सृजनधर्मा के अन्तस में चल रहे उलझनों का संघर्ष, जो कभी वेदना और निराशा से भरा दिखायी देता है, तो कभी इन से दूर न भाग कर समाज की समस्याओं को समाज के सम्मुख रखने का प्रयास करता है, भी दिखायी देता है। वे समाज का मंगल चाहते हैं, इस लिये उन के काव्य में व्यंग्य और आक्रोश दिखायी देता है। वे प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण करते हैं। ग्रामीण जीवन के सजीव चित्रों के साथ शरद ऋतु की पूर्णिमा की निर्मल चाँदनी रात का मनोहारी अंकन भी करते हैं। प्रकृति के माध्यम से वे अपने मन में चल रही अनेक चिन्ताओं व द्वन्द्वों को समाप्त करने का प्रयत्न करते हैं। यह द्वन्द्व उन की कविता 'कगारा टूटेगा' तथा 'व्यथा' में मिलता है। दूसरी ओर 'अवलम्ब' में अमरनाथ यात्रा को कथात्मक रूप में वे व्यक्त करते हैं। अश्क़ ने छनदबद्ध और छन्दमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ लिखीं हैं। प्रारम्भिक रचनाओं में छन्दबद्धता अधिक है, तो वहीं परवर्ती रचनाओं में छन्दमुक्तता अधिक है। वस्तुतः वे किसी एक वाद या एक युग या एक धारा के घेरे में बन्दी नहीं रहे अपितु अपनी सुदीर्घ काव्य यात्रा के मध्य समय की बदलती युग चेतना से अनुप्राणित हो कर उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को पुष्ट किया है।

उत्तर छायावाद भारतीय राजनीति में भारी उथल–पुथल का काल रहा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय, कई विचारधाराओं और आन्दोलनों का प्रभाव पर पड़ा। इस काल की कविता द्वितीय विश्वयुद्ध के भयावह परिणामों के प्रभाव से भी बहुत सीमा तक प्रभावित है। राष्ट्रवादी, गाँधीवादी, विप्लववादी, प्रगतिवादी, यथार्थवादी, हालावादी आदि विविध प्रकार की कविताएँ इस काल में लिखी गयीं। 'प्रात प्रदीप से ले कर 'एक दिन आकाश ने कहा' काव्य–संग्रह की सुदीर्घ काव्य–यात्रा में अश्क़ ने हिन्दी कविता के बदलते तेवर और स्वरूप को बहुत समीप से देखा और अनुभव किया है। यद्यपि अपनी कविता को किसी वाद विशेष से जोड़ने का प्रयास अश्क़ ने कभी नहीं किया तथापि उन के जागरुक कवि ने समय के साथ बदलती काव्य धाराओं से प्रेरणा ग्रहण कर कविता को समृद्ध किया है। छायावाद से ले कर समकालीन काव्य तक की अनेक प्रवृत्तियाँ अश्क़ के काव्य में उपलब्ध हैं। आधुनिक हिन्दी काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के आधार पर यदि अश्क़ के काव्य संग्रहों का विवेचन किया जाये तो ज्ञात होता है, कि उन की आरम्भिक तीन कृतियाँ 'प्रात प्रदीप', 'उर्म्मियाँ', और 'दीप जलेगा' उत्तर छायावाद, वैयक्तिक गीति काव्य तथा राष्ट्रीय काव्य धारा से प्रभावित हैं।

अश्क़ के काव्य में प्रगतिशील काव्यधारा का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। उनकी प्रगतिशीलता केवल मार्क्स के सिद्धान्तों पर ही आधारित नहीं है अपितु उस में उनका सचेतन यथार्थबोध सजीव है। 'चाँदनी और रात और अजगर' तथा 'बरगद की बेटी' इसी श्रेणी की रचनाएँ हैं। इसके पश्चात् की रचनाएँ 'सड़कों पे ढले साये', 'खोया हुआ प्रभा मण्डल' और 'अदृश्य नदी' नयी कविता के शिल्प पर गढ़ी गयी हैं किन्तु नयी कविता के निरर्थक प्रयोगों और शुष्क बौद्धिकता से कोसों दूर है। 'आधुनिक कवि' की भूमिका में अश्क़ लिखते हैं, '' मुझे बच्चन की 'मधुशाला' अच्छी नहीं लगी थी लेकिन 'मधुबाला' और 'मधुकलश' के कुछ गीत विशेषकर, 'प्याला', 'इस पार : उस पार', 'पग ध्वनि', 'कवि की वासना', और 'लहरों का निमंत्रण' बहुत अच्छे लगे थे। पढ़ते ही मुझे कण्ठस्थ हो गये थे और मैं अभिभूत उन्हें गाया करता था। महादेवी वर्मा की 'नीरजा' भी मेरी प्रिय काव्य–पुस्तकों में थी। उनके गीतों में शब्दों का चयन, इमेजरी और संगीतमयता मुझे प्रिय थी। हिन्दी काव्य की ओर मेरी रुचि जगाने में 'नीरजा' का बहुत बड़ा योग है। ..... उन दिनों तो बच्चन, महादेवी, पन्त और नरेन्द्र शर्मा ही मेरे प्रिय कवि थे।''[1] पत्नी की मृत्यु के बाद अश्क़ की निराशा और व्यथा में बच्चन का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है –

''आ जाती है याद जवानी,

जीवन का आह्लाद जवानी,

मेरी वह बर्बाद जवानी,

और घटनाओं–सा घिर आता, प्राणों पर अवसाद!

जीवन की सूनी घड़ियों में, प्राण तुम्हारी याद! [2]

उनका एकाकीपन उन्हें महादेवी के निकट ले जाता है। 'विदा' 'सूनी घड़ियों में', 'सपनों का जागरण' तथा इस संग्रह की लगभग समस्त कविताएँ, कवि की असह्य वेदना, दुःख और अवसाद की अभिव्यक्ति करती हैं। लेकिन महादेवी की तरह वे इसे जीवन का सार नहीं मानते हैं और न ही बच्चन की तरह ही 'हाला' में इसका हल ढूँढते हैं। वे पन्त की तरह जिज्ञासु भाव से प्रकृति में, स्वप्न में जीवन का आह् वान सुनते हैं और यही उनमें नूतन आस जगाते हैं –

''उषा की लाली में जाने, किसका था आह्वान?

प्राणों की वीणा में किसका बजा मनोहर गान?'' [3]

'प्रातः दीप' के उत्तरार्ध में अश्क़ छायावादी निराशा, अवसाद और काल्पनिक जगत से बाहर आने लगते हैं एवं कठोर सामाजिक यथार्थ की ओर अग्रसर होने लगते हैं। इस संदर्भ में स्वयं अश्क़ लिखते हैं, ''जैसे–जैसे मेरी यथार्थवादी दृष्टि विकसित होती गयी, छायावादी कवियों के अलावा मैं दूसरे कवियों को पढ़ता गया, पन्त और महादेवी और बच्चन का जादू टूटता गया है।''[4] इस मोहभंग को 'नीम से' कविता में देखा जा सकता है–

''लेकिन इस दुनिया में उल्फ़त,

तुलती है धन के तोलों में?

विष का सागर बल खाता है

इसके दो मीठे बोलों में।

औ' शम्मी जैसी जाती हैं,

सोने के सुन्दर डोलों में।

ओ नीम'' [5]

यह कविता व्यक्तिगत जीवन की निराशा के स्थान पर पूँजीवाद और सत्ता पक्ष के प्रति आक्रोश को व्यक्त करती है, जो परवर्ती काव्य–संग्रहों में तीव्रतर होता गया। अश्क़ की दृष्टि वर्ग संघर्ष, अत्याचार, शोषण और आर्थिक वैषम्य की खाई के अंकन की ओर उन्मुख हो चली थी। 'दीप जलेगा' खण्ड काव्य सदृश लम्बी कविता में अश्क़ का राष्ट्र प्रेम और उनकी प्रगतिशीलता के दर्शन होते हैं। 'दीप जलेगा' की रचना (दिसम्बर 1946 से जनवरी 1947) करते समय अश्क़ यक्ष्मा से जूझ रहे थे। जीवन के प्रति जिजीविषा ने उन्हें बीमारी के समक्ष घुटने नहीं टेकने दिये। वे लिखते हैं, ''समाज के उस सारे वैषम्य और संघर्ष की चेतना अपने मन में जगाता है, जिसकी सीमाएँ अतीत और वर्तमान को समेटे भविष्य तक व्याप्त हैं और जिसमें पड़ कर युगों–युगों से मनुष्य, जीवन के क्रम, जीवन की रचना–शक्ति, जीवन के सत्य और सौंदर्य को सुरक्षित रखने के लिये अंधकार की शक्तियों से लड़ता आया है और उस समय तक लड़ेगा जब तक यह उत्पीड़न, यह वैषम्य, यह हिंसा, यह ग़ुलामी, यह युद्ध सदा के लिये समाप्त नहीं हो जाते।'' [6]

अश्क़ के काव्य संग्रह 'बरगद की बेटी' खण्डकाव्य में प्रगतिवादी प्रवृत्तियों को अपने कथ्य और शिल्प में समेटे हुए है। इस संग्रह की भूमिका में यशपाल लिखते हैं, ''अश्क़ शोषण के प्रति जो क्षोभ जगाता है, वह औद्योगिक युग की भाषा में है। अश्क़ सामन्तवादी की भूमिका में समाजवादी भाषा बोलता है क्योंकि वह स्वयं औद्योगिक शोषण के काल की उपज है। ..... 'बरगद की बेटी' में नायिका 'लहराँ' की रचना उसने यौवन की सरि तूफ़ानी में मानसिक जल क्रीड़ा के लिये नहीं, शोषण के प्रति वितृष्णा जगाने और ऐसा समय लाने के लिये की है कि :–

जब नारी को मिल जायेगा

उसका खोया अपनापन।

अश्क़ के यहाँ तो बरगद–सी जड़ वस्तु भी जंगम और प्रगति का प्रतीक बन कर आती है..... और वह महान वट प्रगति का ही नहीं, युग की भावना से मुखर कवि का प्रतीक बन जाता है।''[7] इस खण्ड काव्य में आधुनिक भारतीय ग्राम जीवन का परिदृश्य एवं अन्तर्विरोधों का पूर्ण तथा सजीव चित्रण प्राप्त होता है। '' 'चाँदनी रात और अजगर' खण्ड काव्य भी निम्न मध्यम वर्गीय श्रमिक के गत जीवन के संस्मरणों, भूत और वर्तमान के अभावों को प्रस्तुत करता है, पूँजीवादी समाज के वैषम्य और अन्तर्विरोधों को चित्रित करता है। इसमें कवि ने विषय–वस्तु की अभिव्यक्ति को मार्मिक और सुन्दर बनाने के लिये राशिद, फ़ैज़, पन्त, महादेवी की शैलियों से प्रभाव ग्रहण करते हुए अपनी छन्द योजना और शब्द विन्यास में कतिपय नये प्रयोग भी किये हैं।''[8] यह मन की अन्मयस्कता, उद्वेग मनुष्य को विक्षिप्त बना देती है। 'चाँदनी रात और अजगर' में नायक के पिता की स्थिति दर्शनीय है –

''उधर चीखती आयी गाड़ी

औ' विक्षिप्त इधर वे भागे।

गत–आगत का ज्ञान भूल कर

कूद गये वे उसके आगे।'' [9]

'चाँदनी रात और अजगर', 'बरगद की बेटी' और 'दीप जलेगा' में मूलतः प्रगतिवादी काव्य धारा की छाप स्पष्ट दिखायी देती है। 'सड़कों पे ढले साये', 'अदृश्य नदी' और 'खोया हुआ प्रभा मण्डल' में नयी कविता की ओर अश्क़ का रुझान दृष्टिगोचर होता है। 'आधुनिक कवि' की भूमिका में अश्क़ का कथन है, ''चाहे मेरे इर्द–गिर्द कितने ही कवि दिन–रात नयी कविता को ओढ़ते–बिछाते रहे, मैंने उस वक़्त तक नयी कविता नहीं लिखी, जब तक उसका शिल्प पूरी तरह मेरी पकड़ में नहीं आया ..... लेकिन जब मैंने डायलन टॉमस को पढ़ा ..... उसका शब्द विन्यास, इमेजरी, उसके काव्य की स्वीप मुझे अभिभूत कर गयी और जैसा कि मैंने लिखा मैं लगातार कविताएँ लिखता चला गया।''[10] इन कविताओं में सामाजिक विघटन और मूल्यहीनता के बीच आम आदमी की स्थिति, उसकी नियति, राजनीति के बदलते परिदृश्य, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, भौतिक संसाधनों में संलिप्तता और इन सब के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। इन कविताओं की एक विशेषता यह भी है, कि यह शुष्क बौद्धिकता और दुरूहता से सर्वथा मुक्त हैं। ''उसमें कुण्ठाओं को ओढ़ा नहीं गया है, समस्याओं का आरोपण नहीं है, नवीनता के फ़ैशन से अपनी ईमानदारी और अनुभूति के प्रति शुतुरमुर्गीय नीति उसकी नहीं है।''[11]

अश्क़ की कविताओं में आधुनिकता का स्वर है, उन प्रतीकों तथा बिम्बों का प्रयोग है जो यथार्थ जीवन से संबद्ध हैं। मानव के प्रति आस्था है, छोटे–से–छोटे क्षण की अभिव्यक्ति है। मानवीय जीवन दृष्टि की स्वीकृति है और नयी सामाजिक चेतना में विश्वास है। आज के यांत्रिक जीवन की व्यस्तता की अश्क़ बड़ी सहजता से रेखांकित करते हैं –

''पर थका मन

ग्रसित बीसों उलझनों में,

ज़िदगी ने बींध रक्खे हैं सभी क्षण

ओ सुनहली धूप,

बगिया के निराले फूल,

ओ कला, ओ मधुरिमा।

क्षमा करना

मैं अभी ख़ाली नहीं हूँ।''[12]

अश्क़ के हृदय में देश, समाज और मनुष्य की जो स्वर्णिम कल्पना की थी, वह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्रमशः पतनोन्मुख होती चली गयी। इसका प्रभाव 'खोया हुआ प्रभा मण्डल' की कविताओं में दिखायी देता है। इस संग्रह में

उनका आक्रोश, व्यंग्य, कटुता, तिक्तता तथा ललकार उनके राष्ट्र प्रेम का परिचायक है। इस की भूमिका में सुरेन्द्र पाल लिखते हैं, ''अनेक सामाजिक स्थितियों और वर्जनाओं और रियाकारियों (हिपोक्रिसीज़) और धूर्तताओं के प्रति एक भयावह आक्रोश और एक विघटनकारी दुःख बोध इस संग्रह की कविताओं में व्यक्त हुआ है ... किन्तु साथ ही कवि के भीतर इस तरह की अभिव्यक्ति को ले कर संकोच भी है और इन विघटनकारी स्थितियों के प्रति अनास्था भी।''[13] जहाँ एक ओर वे राष्ट्र के कर्णधारों के अपमान से चिन्तित हैं –

''अपने छिछलेपन में

उपहास का भरा साँप मेरे गले में डाल,

सुनो।

यह तक्षक पलट कर तुम्हीं को डसेगा।''[14]

वहीं भ्रष्ट शासन पर व्यंग्य करते हुए अश्क़ कहते हैं –

''अपने तख़्त के पायों पर चाँदी के पत्र मढ़ा लो।

इनकी बदसूरती तुम्हारी सत्ता का भरम खोलती है।''[15]

इस संग्रह के दूसरे की कविताओं में अस्तित्ववादी काव्य धारा की विशेषताओं यथा वैयक्तिक दुःख, निराशा, एकाकीपन इत्यादि से अनुप्राणित रचनाओं के माध्यम से वे जीवन के यथार्थ को प्रकट करते हैं। 'अदृश्य नदी' के तीसरे खण्ड में अश्क़ ने ग़ज़लों को अपने काव्य में स्थान दिया है। इस संग्रह एवं इसके पश्चात् के अन्य संग्रहों में समकालीन काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होना प्रारम्भ हो जाती हैं।

अश्क़ के काव्य में मूलतः छायोवादोत्तर काव्य प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इन प्रवृत्तियों के प्रति उनका समर्पण किसी प्रतिबद्धता के चलते न हो कर सहज भाव से ही है। अश्क़ ने अपनी सृजन यात्रा में ऐसी किसी भी धारा या प्रवृत्ति का सदा विरोध किया है, जो काव्य के उद्देश्य के सम्प्रेषण में बाधा पहुँचाती हो तथा जो सहजता के धरातल पर प्रामाणिक न लगती हो। इस कारण ही उनकी रचनाएँ छायावादी युग में भी रहस्यवाद से मुक्त हैं, प्रगतिवादी युग में प्रचार–प्रसार से मुक्त हैं और नयी कविता की अगुआई करते हुए भी बौद्धिक जटिलता, कृत्रिम कुण्ठा, बनावटी निराशा, अति अहमवादिता से सर्वथा मुक्त हैं। अश्क़ की काव्य धारा छायावादोत्तर काव्य प्रवृत्तियों से संबद्ध होते हुए अपनी विशिष्टताओं को समेटे, साहित्य में अपनी पृथक् पहचान बनाये हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – आधुनिक कवि, भूमिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1978 , पृ. 16–17
2. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – दीप जलेगा, 'सूनी घड़ियों में', नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1950, पृ. 35
3. वही 'नाविक से' पृ. 48
4. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – आधुनिक कवि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1978, पृ. 17
5. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – दीप जलेगा, 'नीम से', नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1950, पृ. 149
6. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – चाँदनी रात और अजगर, अश्क़ की कविता : शिवदान सिंह चौहान, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1952, पृ. 18
7. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – बरगद की बेटी, परिचय : यशपाल, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980, पृ. 17–18
8. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – चाँदनी रात और अजगर, अश्क़ की कविता : शिवदान सिंह चौहान, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1952, पृ. 21
9. वही पृ. 87
10. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – आधुनिक कवि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,1978, पृ. 30–31
11. धनंजय वर्मा – आस्वाद के धरातल, पृ. 152
12. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – सड़कों पे ढले साये, सुरेन्द्र पाल, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1960, पृ. 79–80
13. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – खोया हुआ प्रभा मण्डल , सुरेन्द्र पाल, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1965, पृ. 13
14. वही, 'परीक्षित पुत्रों के प्रति', पृ. 38
15. अश्क़ उपेन्द्रनाथ – अदृश्य नदी, 'तख़्त के पायों पर', नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977, पृ. 21

.....